शुक देव ने कहा, "भगवान और संतों जैसे सक्षम व्यक्ति कभी-कभी धर्म के विपरित काम करते हुए देखे जाते है लेकिन यह उन परम उज्वल लोगों में कोई दोष नहीं लाता है। वे काम केवल जीव कल्याण के लिए ही हेते है। भलेही अल्पज्ञ जीव इसे ना समझ पाए। उदाहरण के लिए देखें, आग सबकुछ खाती है लेकिन आग अशुद्धता को भस्म कर देती है उससे अशुद्ध नहीं हो जाती। अक्षम मायिक व्यक्तियों को जिनके पास ऐसी (आध्यात्मिक) शक्ति नहीं है, कभी भी मन से भी इस तरह के कार्यों का अनुकरण करने के बारे में नही सोचना चाहिए, तो उन कार्यों का शारीरिक अनुकरण कल्पना से परे है। अगर कोई मूर्खता से ऐसा करता है, तो उसका विनाश निश्चित है। भगवान शंकर ने बेहद खतरनाक हलाहल जहर निगल लिया था। वे तो नीलकंठ से सुशोभित हो गये। लेकिन अगर कोई और ऐसा करता है, तो वह तुरंत राख में परिवर्तित हो जाएगा!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

ईश्वरीय कार्य जो दिव्य है, उन्हे भरे और बुरे जैसे भौतिक विशेषणों द्वारा वर्णित नही किया जा सकता। ईश्वरीय कार्य पाप और पुण्य से परे होता है। जिन भगवान की के चरणधूल पाकर भक्त दिव्य अनन्त आनंद से अनुग्रहित हो जाते है, जिनका ध्यान करके योगी अपने स्वरूप में स्थित होकर दिव्य अनन्त आनंद का अनुभव करते है, जिनके बारे में सोचकर कि उनके दिव्य रूप में स्थापित होने के बारे में सोचकर दिव्य अनन्त ब्रम्हानंद का आस्वादन करते है और ये तीनो मायिक इंद्रिय सुख को विष्ठा समान त्याग देते है, वो भगवान खुद काम , क्रोध के कार्य में कैसे लिप्त हो सकता है?। जब भगवान को पानेवाला ही कर्म बंधन से मुक्त होकर स्वच्छंद विहार करता है , तो फिर भगवान कार्यों के कारण कोई भी बंधन के बारे में सोच सकता है? भगवान और संत लोगों के कार्य मायिक लोगों को दुःखार्णव से बाहर निकालने के लिए ही होते है। (उन्हें दिव्य दुनिया की खुशी के बारे में बताकर मायिक लोगों के सुधार के लिए)। जो गोपियाँ और उनके पतियों सहित हर दिल में रहता है, जो सब कुछ देखता है

जो हर किसी को कार्य करने की शक्ति देकर प्रेरित करता है और जो सब जीवों के एकमात्र है, वो भगवान किसी के लिए पराया कैसे हो सकता है? ईश्वर सभी जीवों को अनुग्रहित करने के लिए अपने भक्तों के साथ दिव्य लीलाएँ करता है, जिनको ताकि सुनकर जीव शाश्वत, अनंत, नितनवायमानऔर नित्य वर्धमान दिव्य आनंद प्राप्त कर सकें।

ब्रज के पुरुषों ने श्रीकृष्ण के बारे में किसी भी गलत के बारे में कभी सोचा नहीं था क्योंकि उन्हें हमेशा एहसास हुआ कि उनकी पत्नियां उनके साथ हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

शुकदेव ने कहा, "गोपियों को अपने घर लौटने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन श्रीकृष्ण के आदेश से वे घर गए थे क्योंकि वे अपनी हर कार्य से श्रीकृष्ण को खुश करना चाहती थी।" इस प्रकार शुक देव ने रास के विवरण को समाप्त कर दिया।